ज्यादातर इसलिए सफल नहीं हो पाते क्योंकि वह दूसरो की ज्यादा सुनते है।
– अज्ञात

मानसून ने देश में दे दी दस्तक

मानसून ने न केवल समय पर देश में दस्तक दी है बल्कि इस साल इसके पूरी तरह सामान्य रहने की भविष्यवाणी भी की गई है। अगले चार महीनों में देश में मानसूनी बारिश पिछले पचास वर्षों के अपने औसत के 96 से 104 फीसदी के बीच ही रहेगी, न इससे कम न ज्यादा।

ममता भट्ट।

तमाम प्रतिकूलताओं के बीच कम से कम मौसम देशवासियों को अपनी तरफ से आश्वस्त कर रहा है। मानसून ने न केवल समय पर देश में दस्तक दी है बल्कि इस साल इसके पूरी तरह सामान्य रहने की भविष्यवाणी भी की गई है। ब्यौरे में जाएं तो इसका मतलब यह हुआ कि अगले चार महीनों में देश में मानसूनी बारिश पिछले पचास वर्षों के अपने औसत के 96 से 104 फीसदी के बीच ही रहेगी, न इससे कम न ज्यादा।

सिंचाई के वैकल्पिक साधनों के अभाव में भारतीय किसान आज भी अपने खेतों की प्यास बुझाने के लिए प्रायः आसमान की ही ओर देखता है, लिहाजा इस खबर में सबसे बड़ी राहत उसी के लिए है। कोरोना और लॉकडाउन ने यूं तो पूरे देश को और संपूर्ण इकॉनमी को पस्त कर रखा है, लेकिन ग्रामीण भारत इस रूप में दोहरी मार सह रहा है कि एक तरफ उसकी अपनी कमाई प्रभावित हुई है, दूसरी तरफ शहरों में मेहनत–मजदूरी कर अपना पालन–पोषण करने और किसान को कुछ हद तक नकदी का सहारा देने वाले उसके परिजन अपनी रोजी–रोटी गंवाकर उसके पास लौट आए हैं।

ऐसे में मानसून के समय पर आने और सामान्य रहने की खबर उम्मीद और आत्मविश्वास के साथ खेत पर जाने में उसकी मदद करेगी। हालांकि कोरोना और लॉकडाउन की दोहरी मार से उबरने में जुटे किसानों के सिर पर अभी जो सबसे बड़ा संकट मंडरा रहा है उससे बचने की कोई सूरत आज भी बनती नहीं दिख रही है। यह संकट है टिड्डी दलों का हमला। रोकने के तमाम प्रयासों के बावजूद उत्तर–पश्चिम से आई यह आफत पूरब में छत्तीसगढ़ और दक्षिण में आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु तक जा पहुंची हैं।

राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और साल के शुरू में पंजाब इनके हमलों की जद में आ ही चुके हैं, केंद्र सरकार ने आसपास के बाकी राज्यों को भी सावधान रहने की चेतावनी जारी कर दी है। टिड्डियों की यह प्रजाति पिछले साल कड़ाके की ठंड में भी सक्रिय पाई गई है, इसलिए अगर समय रहते इन्हें समाप्त नहीं किया जा सका तो ये किसानों के लिए बहुत बड़ा सिरदर्द साबित हो सकती हैं। इन चुनौतियों को देखते हुए किसानों को अपनी तरफ से थोड़ी राहत देने की कोशिश सरकार ने सोमवार को न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में कुछ बढ़ोतरी करके की है।

खरीफ की 14 फसलों में 50 से 83 फीसदी एमएसपी बढ़ाने की घोषणा के बीच कपास, मूंग, और मूंगफली जैसी फसलों में तो एमएसपी 50 फीसदी बढ़ाई गई है, पर खरीफ की मुख्य फसल धान में इसे 53 रुपये प्रति क्विंटल यानी तीन फीसदी से भी कम बढ़ाने का फैसला हुआ है। साफ है कि किसानों के बड़े हिस्से को इस नाम मात्र की बढ़ोतरी से संतोष करना पड़ेगा। ऐसे में यह घोषणा देश की खेती का और किसानों का कितना भला कर पाएगी, कहना मुश्किल है। विकास के चक्के को अगले कुछ महीनों तक खेती की ही धुरी पर घूमना है, लिहाजा सरकार को इस तरफ ज्यादा दरियादिली दिखानी चाहिए।

परिकल्पना

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा। क्या श्रीराम द्वारा स्थापित रामराज्य बिना किसी सामाजिक परिवर्तन के आदर्श राज्य बन सका, जिसकी परिकल्पना आज भी की जाती है। क्या इस तरह का आदर्श राज्य वर्ग संघर्ष से संभव था, जिसमें सर्वहारा व बुर्जुआ की लड़ाई जारी रहती? 18वीं–19वीं शताब्दी में यही संघर्ष पश्चिमी जगत के लिए आदर्श स्थिति बन गयी, जबकि वर्गीय हितों के लिए मानवीय मूल्यों की तीलांजलि दी जाने लगी। क्या वनवासी श्रीराम उस युवा राजकुमार के रूप में ज्यादा महान बन पाते, जिसे केवल उत्तराधिकार के रूप में एक वृहद राज्य के संचालन का दायित्व मिल गया होता। उपरोक्त सभी संशयों के निदान उन जूठे बेरों की असीमित संभावना में छिपे हैं, जिनके कारण, एकमात्र जिनकी वजह से उस अंतर्निहित चेतना की गूंज सुनाई देती है, जहां से शुरू होती है श्रीराम के मर्यादा पुरुषोत्तम बनने की कथा और रामराज्य जैसे एक आदर्श वर्गीय हितों को दरकिनार कर वर्गीय–वर्णीय सहयोग की नीति।

संपादकीय

कैसा होगा मानसून सत्र

सूत्रों के अनुसार इसी हफ्ते मानसून सत्र की रूपरेखा भी तय हो सकती है। कोरोना संकट और उसके बाद उपजे हालात पर चर्चा के लिए सरकार पर संसद सत्र बुलाने का दबाव है। वैसे भी मानसून सत्र बुलाना संवैधानिक बाध्यता है। यह हर साल अमूमन जून–जुलाई में आयोजित होता है। जानकारी के अनुसार जुलाई महीने में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ सत्र बुलाने पर पहल हुई है। सत्र इस बार अलग–अलग सदनों में न आयोजित होकर, सेंट्रल हॉल में आयोजित होगा और यहां ऑड–ईवन लागू हो सकता है। मतलब एक दिन राज्यसभा बैठेगी तो अगले दिन लोकसभा। दरअसल कोरोना संकट के दौरान पूरे विश्व में लगभग सभी देशों ने सत्र आयोजित कर इस पर विस्तार से बहस की है।

सत्र में कोरोना संकट और उसके निपटने के लिए किए गए इंतजामों पर चर्चा हो सकती है और विपक्ष सरकार को घेरने की कोशिश कर सकता है। सत्र कब बुलाया जाएगा और उसका स्वरूप क्या होगा, इस बारे में अगले हफ्ते अंतिम फैसला हो सकता है। पिछले पंद्रह दिनों के अंदर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला और राज्यसभा के सभापति वेंकैया नायडू की तीन बार मीटिंग भी हो चुकी है। हालांकि पिछले कुछ दिनों के अंदर जिस तरह पूरे देश में कोरोना के नए मामलों की तादाद तेजी से बढ़ी है, उसके बाद अब फिर संदेह के बादल मंडराने लगे हैं। लेकिन सरकार ने संकेत दिए हैं कि किसी भी सूरत में सत्र का आयोजन होगा और जल्द ही इसके प्रारूप पर भी फैसला हो जाएगा।

बीजेपी ने दावा किया है कि वह इस हफ्ते शुरू हो रहे अभियान में राज्य की समस्त जनता तक पहुंच बनाएगी। वहीं नीतीश कुमार 7 से 15 जून के बीच राज्य के सभी जिलों में वर्चुअल रैली के माध्यम से पहुंचेंगे।

बिहार चुनाव की तैयारी

नरेंद्र नाथ

कोरोना में लागू लॉकडाउन के बाद सियासी गतिविधियां एक तरह से ठप सी हो गई थीं। अब राजनीतिक हलचलें फिर शुरू होंगी। इस हफ्ते कई सियासी घटनाएं भी देखने को मिल सकती हैं। बिहार की राजनीति में नया प्रयोग तो शुरू हो ही गया है, साथ–साथ जेडीयू, बीजेपी और आरजेडी सहित सभी दलों ने ऑनलाइन चुनावी अभियान भी शुरू कर दिया है। बीजेपी ने दावा किया है कि वह इस हफ्ते शुरू हो रहे अभियान में राज्य की समस्त जनता तक पहुंच बनाएगी। वहीं नीतीश कुमार 7 से 15 जून के बीच राज्य के सभी जिलों में वर्चुअल रैली के माध्यम से पहुंचेंगे।

बिहार के साथ ही मध्य प्रदेश में भी 24 सीटों पर उपचुनाव होने हैं, जो राष्ट्रीय राजनीति के लिए बेहद अहम माने जा रहे हैं। ये उपचुनाव उन सीटों पर होंगे, जिन पर कांग्रेस के जीते विधायक पार्टी छोड़कर बीजेपी में गए और जिसके बाद शिवराज सिंह चौहान ने कमलनाथ की सरकार गिराकर फिर सीएम की गद्दी पाई। वहीं ये चुनाव ज्योतिरादित्य सिंधिया के लिए भी अहम होंगे, जो हाल ही में कांग्रेस से बीजेपी में गए हैं। वे अपने समर्थकों के साथ लगातार मीटिंग भी कर रहे हैं। इसी हफ्ते यूपीए और

एनडीए में गठबंधन के स्तर पर भी कई तरह की मीटिंगें होनी हैं।

बिहार विधानसभा चुनाव इस साल के अक्टूबर–नवंबर में होने हैं। इसकी अधिसूचना अगस्त में जारी हो सकती है। हालांकि चुनाव आयोग के सूत्रों के अनुसार अभी बिहार चुनाव के बारे में कुछ कहना जल्दबाजी होगा। अधिकारियों के अनुसार विधानसभा चुनाव के लिए तैयारी का काम बहुत पहले से ही शुरू हो जाता है। वोटर लिस्ट तैयार करने से लेकर बाकी तमाम कार्यों में बहुत वक्त लगता है। अब इसमें कम से कम दो महीने की देर हो चुकी है। इसके अलावा बिहार के कई जिले हर साल जून–जुलाई में बाढ़ से गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं। आयोग के एक सीनियर अधिकारी ने माना कि लॉकडाउन पूरी तरह उठने और हालात सामान्य होने के बाद आयोग को तत्काल युद्ध स्तर पर जुटना होगा, तभी वहां तय समय पर चुनाव हो सकेंगे। साफ है कि चुनाव टलने की बात न कही जाए तो भी इतना तो तय है कि समय पर चुनाव आज की तारीख में काफी मुश्किल लग रहा है। इसके बावजूद आयोग से लेकर राजनीतिक दल तक तय समय पर चुनाव होने के बारे में आश्वस्त हैं। इसी चुनाव में कांग्रेस से बीजेपी में गए ज्योतिरादित्य सिंधिया भी हिस्सा लेना चाहते हैं।

मध्य प्रदेश में राज्यसभा चुनाव से पहले कांग्रेस और बीजेपी में माइंड गेम भी शुरू हो गया है। कांग्रेस की ओर से दिग्विजय सिंह मैदान में हैं। वहीं कर्नाटक में राज्यसभा चुनाव में कांग्रेस ने बीजेपी को रोकने के लिए वहां पूर्व पीएम और जेडीएस नेता एचडी देवेगौड़ा को सपोर्ट करने का फैसला किया है। इसके साथ ही राज्य में फिर से देवेगौड़ा की पार्टी और कांग्रेस में नजदीकी बढ़ सकती है। कांग्रेस ने यह भी दावा किया है कि येदियुरप्पा से नाराज कई बीजेपी नेता उसके संपर्क में हैं और उनकी बातें सुनने के लिए पार्टी ने एक कमिटी तक बना दी है। हालांकि बीजेपी ने राज्य सरकार में किसी तरह की अस्थिरता होने की बात को खारिज किया है। राज्यसभा की 24 सीटों पर चुनाव के बाद उच्च सदन में बीजेपी का दबदबा और बढ़ सकता है।

अष्टयोग-5077

	3	2		6		5
	33		35		28	
1		5	4			2
	35		35	7	32	
7		6		4		1
	33		31		30	4
3		4		2	5	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5076 का हल

6	1	4	7	2	5	3
5	33	3	35	1	27	7
4	3	7	5	6	1	2
3	29	2	45	7	33	6
1	3	6	7	5	2	4
2	29	1	33	4	30	5
7	4	5	2	3	6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

राज्यसभा चुनाव में दंगल

मोहन। वहीं 19 जून को राज्यसभा की 24 सीटों पर होने वाले चुनाव को लेकर अगले से हफ्ते जोड़–तोड़ तेज होगी। यह चुनाव 26 मार्च को होना था, लेकिन कोरोना के कारण टल गया था। राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात की राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव दिलचस्प होने की संभावना बन गई है, जहां बीजेपी की नजर कांग्रेस के बागी विधायकों की क्रॉस वोटिंग पर है। गुजरात में तो कांग्रेस विधायकों के टूटने के बाद एक सीट पर खतरा भी पैदा हो गया है। वहां कांग्रेस दो सीट जीत सकती थी, लेकिन दो दिनों के अंदर बीजेपी ने पार्टी के तीन एमएलए को अपने पाले में मिला लिया। कांग्रेस ने यहां दो उम्मीदवार खड़े किए हैं और अब पार्टी को रणनीति बनाने में बहुत परेशानी हो सकती है।